Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 07, July - 2024

DOIs:10.2018/SS/202407002 --:-- Research Paper / Article / Review

विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन

[1]डॉ. राजीव अग्रवाल, [2]डॉ. सौरभ कुमार गौतम, [3]दीपक कुमार
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०), 210201
[2]सहायक अध्यापक, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०), 210201
[3]शोध छात्र, शिक्षक-शिक्षा विभाग, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०), 210201
Email – [1]rajeevadc@gmail.com, [2]gautamsaurabh123s@gmail.com, [3]dkmed1990@gmail.com

शोध सार: *किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा। यूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उसे कल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं। यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी या यूं कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो संबंधित राष्ट्र के वर्षों पुरानी इतिहास की गौरव गाथा रहती हैं, उसके संरक्षण का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है। भारत में भी कई ऐतिहासिक मंदिर, पुरास्थल एवं अन्य इमारतें हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती है। लेकिन समय के साथ-साथ इन इमारतों और उनमें रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुंचा है। हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खंडित किया है। यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे। आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो। चित्रकूट स्थित मड़फा दुर्ग चंदेलकालीन प्रसिद्ध दुर्ग है प्रस्तुत शोध पत्र में इसके प्रति विद्यार्थियों में जागरूक का अध्ययन किया गया है।*

मूल शब्द: *ऐतिहासिक विरासत, मड़फा दुर्ग, जागरूकता, विद्यार्थी, अध्ययन।*

1. प्रस्तावना :

मनुष्य स्वभावत: प्रगतिशील प्राणी है। यह है बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरंतर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन पद्धति, रीति रिवाज, रहन-सहन आचार विचार नवीन अनुसंधान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊंचा उठता है तथा सभ्य बनता है। सभ्यता संस्कृति का अंग है। सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही संतुष्ट नहीं हो जाता। वह भोजन से ही नहीं जीता, शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। भौतिक उन्नति से शरीर की भूख मिट सकती है, किंतु इसके बावजूद मन और आत्मा तो अतृप्त ही बने रहते हैं। इन्हें संतुष्ट करने के लिए मनुष्य अपना जो विकास और उन्नति करता है, उसे संस्कृति कहते हैं। मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन होते हैं।

सौंदर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु आदि अनेक कलाओं को उन्नत करता है। सुखपूर्वक निवास के लिए सामाजिक और राजनीतिक संघटनो का निर्माण करता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति की सूचक उनकी प्रत्येक सम्यक में कृति संस्कृति का अंग बनती है। इसमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान-विज्ञानों और कलाओं, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं और प्रथाओं का समावेश होता है।

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव जीवन की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झांकी हमें देखने को मिलती है। इसमें समस्त कृत्यों का क्रमवार ढंग से निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता है। इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में ना तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आंकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया गया है। इतिहास के शिक्षण से विद्यार्थियों में अपने देश के अतीत के प्रति प्रेम और गौरव की भावना उत्पन्न होती है। इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी ना किसी रूप में प्राप्त होते हैं।

2. मड़फा दुर्ग

मड़फा दुर्ग भी एक चंदेलकालीन किला है। यह दुर्ग चित्रकूट से 30 किलोमीटर की दूरी पर है। भरतकूप मार्ग पर बरिया मानपुर के समीप दुर्ग एक पहाड़ी पर है। चंदेल शासन काल में इस दुर्ग का महत्वपूर्ण स्थान था तथा दुर्ग के भग्नावशेष यहां आज भी उपलब्ध होते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से इस दुर्ग का विशेष महत्व था तथा यहां का प्राकृतिक सौंदर्य भी सराहनीय है। इस दुर्ग में चढ़ने के लिए तीन रास्ते हैं। पहला मार्ग उत्तर पूर्व से मानपुर गांव से है तथा दूसरा मार्ग दक्षिण पूर्व से सांवरिया गांव से है तथा तीसरा मार्ग कुरहन गांव से है तथा ये मार्ग दक्षिण पश्चिम में है। अब इस मार्ग में प्रवेश करने के लिए एक ही द्वार बचा है। इस द्वार को हाथी दरवाजा के नाम से पुकारा जाता है। यह द्वार लाल रंग के बलुआ पत्थर से निर्मित है। चंदेलों के दुर्ग और मंदिर समस्त स्थलों पर इन्हीं पत्थरों से निर्मित हुए थे। यहां से कुछ दूरी पर खभरिया के समीप चंदेल कालीन दो मंदिर मिलते हैं। तथा यहीं पर एक सरोवर है और उसके ऊपर छत है जो 4 स्तंभों से रुकी हुई है। मड़फा दुर्ग समुद्र तल से 387 मीटर की ऊंचाई पर है, इसी दुर्ग के पश्चिमी किनारे पर एक अन्य तालाब है इसका निर्माण चट्टान काटकर किया गया है तथा करहन दरवाजे के समीप कुछ चंदेलकालीन मंदिर भी हैं।

मड़फा दुर्ग की खोज अंग्रेज इतिहासकार ने 18वीं शताब्दी में की थी और इसे मड़फा नाम प्रदान किया था। इस दुर्ग में बघेलो और बुंदेलो नरेशों का राज रहा। यहां का अंतिम शासक हरिवंश राय था जिसका पतन चचरिया युद्ध के पश्चात हुआ। यह युद्ध सन् 1780 में बांदा के राजा और पन्ना के राजा के मध्य हुआ था। सन् 1804 में ब्रिटिश सैनिकों ने इसे अपने अधिकार में ले लिया था।

इस दुर्ग के चारों ओर घना जंगल है। मड़फा दुर्ग में अनेक दर्शनीय स्थल है। हाथी दरवाजे के सन्निकट भगवान शिव का एक विशालकाय मंदिर है। इसी के पास एक तालाब भी है जिसकी मान्यता है कि इसमें स्नान करने से चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं। यहीं से थोड़ी दूरी पर अनेक छोटे-छोटे मंदिर मिलते होते हैं। इन मंदिरों को बारादरी के नाम से पुकारा जाता है। यहीं से थोड़ी दूर चलने पर दुर्ग के नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां लगी हुई है। जिसके समीप गौरी शंकर गुफा नाम का एक स्थान है। यहां अनेक अर्ध निर्मित मूर्तियां हैं तथा साधु संतों की एक प्राकृतिक गुफा भी है। इतिहास के साक्ष्यों के अनुसार यह स्थल मांडव ऋषि की तपस्थली थी तथा यहीं पर शकुंतला ने दुष्यंत के संयोग से अपने पुत्र भरत को जन्म दिया था।

3. अध्ययन का औचित्य

हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती हैं। साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक यहां आते हैं। वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ी को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गो, समुदाय के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है। वे उन्हें आवश्यकता अनुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं। उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं। इसी प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है। किंतु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इसके आसपास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर काम होता जा रहा है। इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं। आसपास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा हो रहा है। जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक नहीं होंगे तब तक इन विरासतो का अस्तित्व बचाए रखना होगा।

4. समस्या कथन :

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है "विद्यार्थियों में मर्फा दूर के प्रति जागरूकता का अध्ययन।"

5. अध्ययन के उद्देश्य :

- छात्र-छात्राओं में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।
- मड़फा दुर्ग के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना।
- मड़फा दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता संवर्धन के संबंध में सुझाव प्रस्तुत करना।

6. परिकल्पना :

छात्र-छात्राओं की मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. शोध विधि :

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान पर आधारित है। वर्णनात्मक अनुसंधान का एक सर्वाधिक प्रचलित प्रकार सर्वेक्षण अनुसंधान है। सर्वेक्षण किसी क्षेत्र, समूह या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने, विश्लेषित करने, व्याख्यित करने तथा प्रतिवेदित करने का एक सुनियोजित प्रयास है। जिसमें प्रायः प्रश्नावली, साक्षात्कार या परीक्षणों के माध्यम से काफी अधिक व्यक्तियों से प्रदत्त संकलित किए जाते हैं।

8. प्रतिदर्श चयन :

शोध के संदर्भ में प्रतिदर्श चयन के निमित्त असंभाव्य प्रतिदर्श चयन प्राविधि को ग्रहण किया गया। चित्रकूट मंडल से बांदा व चित्रकूट जिले के 50 विद्यार्थियों का चयन आकस्मिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा किया गया।

9. शोध उपकरण :

शोधकर्ता द्वारा मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें से मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता के 35 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया तथा मिश्रित प्रश्नावली का चयन किया गया जिसमें 24 बहुविकल्पात्मक, तथा 11 चित्रात्मक लघु उत्तरीय प्रश्न सम्मिलित है।

10. प्रदत्त विश्लेषण :

छात्र-छात्राओं में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	स्वतंत्रांश (df)	t-गणना मान	सार्थकता स्तर	t - तालिका मान
छात्र	35	17.34286	5.59381	48	0.2456	0.05	2.0218
छात्राएँ	15	17.7333	4.94927				

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 17.3 4286 एवं छात्राओं का मध्यमान 17.7 333 है तथा परिगणित t गणना मान 0.2456 है, जोकि स्वतंत्राश 48 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर t तालिका मान 2.0218 से बहुत कम है।

अतः शून्य परिकल्पना "छात्र-छात्राओं की मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। परिकल्पना परीक्षण में छात्र-छात्राओं की मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता स्तर समान पाया गया है।

11. निष्कर्ष :

मड़फा दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मड़फा दुर्ग में पर्यटन विकास के लिए –

- मड़फा तक जाने वाले मार्ग में थोड़ी-थोड़ी दूर संकेतक लगाए जाएं।
- यहां पर चढ़ते समय रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- सुरक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे यात्रियों को भय ना हो।
- मड़फा दुर्ग तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाए।
- शंकर जी की मूर्ति के पास भंडारा करने के लिए छाया के लिए टीन-सेट लगवाना चाहिए।

12. सुझाव :

- "महिमावान मड़फा क्षेत्र" नामक पुस्तक को, पुस्तक के अंश, सम्पूर्ण पुस्तक को चित्रकूट जनपद के विभिन्न विद्यालयी स्तरों पर सम्मिलित किया जाना चाहिए अथवा पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- मड़फा दुर्ग के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
- ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्ययोजना तैयार की जानी चाहिए।
- मड़फा दुर्ग /प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/शौर्य/वीरता/ पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतरिक्त सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।
- शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत नगर के मुख्य चौराहों में लगाया जाये|

- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आस-पास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए|
- यहां पर जुड़ी हुई लोक संगीत परंपराओं को विकसित करके समय-समय पर उसका प्रस्तुतीकरण हो।
- परंपरागत कुटीर उद्योगों को विकसित किया जाए।

संदर्भ :

1. शुक्ल, हरि: ओ३म तत्सत ब्रह्म. (2018). महिमावान मड़फा क्षेत्र. प्रयागराज: साधना सदन.
2. चौरसिया, पूजा. (2019). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन. लघु शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र. अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज (बांदा).
3. देवी, प्रतिभा. (2019). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति जागरूकता का अध्ययन. लघु शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र. अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज अतर्रा (बांदा).
4. गुप्ता एस०पी०(2017). अनुसंधान संदर्शिका. प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन.